

## सूरह कौसर<sup>[1]</sup> - 108



### सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "कौसर" शब्द आया है जिस का अर्थ है: बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम "सूरह कौसर" है।<sup>[1]</sup>
- इस की आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत 2 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज़ पढ़ते रहने तथा कुर्बानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शत्रु हैं वह आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बड़ी भलाई से वंचित रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौसर एक नहर है जो तुम्हारे नबी को प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोती के और वर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुखारी: 4965)

1 यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का वासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्डन किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई।

आप अपने थोड़े से साथियों के साथ निस्सहाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खुशियाँ मनाईं। और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। वह निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेना नहीं रह जायेगा। ऐसे हृदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव है। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर बादियों का कोई सहायक नहीं रह गया। और उन्हें विवश हो कर हथियार डाल देने पड़े। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेना नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोड़ों मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुखारी: 4966)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।<sup>[1]</sup>
2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।<sup>[2]</sup>
3. निःसंदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।<sup>[3]</sup>

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

- 1 कौसर का अर्थ है: असीम तथा अपार शुभ। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि कौसर एक हौज़ (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जल दूध से उजला और मधु से अधिक मधुर होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी, उस की सीमा और बर्तनों का सविस्तार वर्णन हदीसों में आया है।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करो और बली भी उसी के लिये दो। मूर्ति पूजकों की भाँति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हे कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।
- 3 आयत नं० 3 में "अबतर" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: जड़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पेड़ सूख जाता है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये, या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये, और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेना न हो। इस आयत में जो भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव संसार को इस्लाम और कुर्आन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)